

सुनील कुमार यादव



अश्रु प्रलय

किसी मरु भूमि से नहीं उपजा,
ये विकलता का गान,
मेरे हृदय से निकला,
यह करुणा का महागान,

उद्विग्न हुआ हृदय मेरा,
एक तस्वीर पलता है,
अब जहां के पीर में,
यह व्यथित हृदय मेरा ढलता है।
वेध करकश के बाणों से,
खेल हृदय पर खेलता,
वह कौन संदिग्ध हृदय,
वह जो आज मेरे हृदय को ठगता है।

जिसे स्वाति की बूंद समझा,
वो अब अंगारे बरसाता है,
मैं ही नहीं इस आग में,
सारा जग जलता है।
ये कैसी करुण वेदना का धाम,
आज मेरे हृदय में,
रो रहा उत्कर्ष मेरा,
आज तेरे दामन में,

इस अंत से अनभिज्ञ तू,
क्या अर्पित करूँ तेरे नमन में,
मिट रहा अस्तित्व मेरा,
कैसे खिलूँ अब तेरे चमन में,
कल नहीं रहेगा भान तेरा,
यह करुण वेदना मिट जाएगी,
आज की रात आँसू की बरखा में,
सारी स्मृति धूल जाएगी।

लेख मेरे हृदय का,
अब सब मिट जाएगा,

जब सारे प्रेम पत्र,
आँसूओं में गल जाएगा।
प्रबल वेदना से तब,
एक पवित्रता का हान होगा,
तेरे ही हाथों से मेरे,
प्रेम का महाविनाश होगा।
किसी सूक्ष्म हृदय को नहीं,
आज तूने जग हृदय को ललकारा,
सूरज की तपिश गौण हुआ,
इतना धधक रहा हृदय का अंगारा,

व्याकुलता की आग में,
इतना बढ़ा जलन का पारा,
बरस रहा आसमां भी,
आज मौन हो कर रहा अंगारा।
इस तपिश से घटता हिम,
प्रशांत में भी आया हलचल,
उड़ रहे खग भाप प्रलय को,
हुआ नभ में भी हलचल,

दूजा कोई मनु यहाँ,
अब नहीं बच पाएगा,
जब मेरे आंसुओं से,
यह धरा जलमग्न हो जाएगा।

प्रेम ही नहीं मेरा,
यह संसार मिट जाएगा,
अश्रु प्रलय के बाद मेरा,
हृदय भी सुख जाएगा।